Information contained in this work has been obtained from the scholars who presented their papers. The organizers, publishers are herein not responsible for any errors, and the authors shall be responsible for any errors. This work is published with the understanding of the organizers and publishers in providing information.

All rights are reserved. This book or parts thereof may not be reproduced in any form or by any means electronic or mechanical including photocopying, recording or an information storage and retrieved system now known or to be invented without permission from copyright owners.

"Two Days National Conference on Holistic Development through Language and Literature"

First Edition : 2020

Copyright © **Dr. Viswanadham Bulusu and Dr. Padmaja K**

ISBN : 978-93-85132-93-3

Vaagdevi Publishers
H.No. 2-2-1167/2H, Near Railway Bridge, Tilaknagar, Nallakunta, Hyderabad - 500044.
Ph: 9849465291

Aurora's Degree & PG College
(Accredited by NAAC with "B++" Grade)
Chikkadpally, Hyderabad -500020
Tel: 040 2766 2668 URL: www.adc.edu.in

Scanned with CamScanner

2. चरित्र निर्माण में हिंदी दोहों की प्रासंगिकता

डॉ. अफ़सर उन्निसां बेगम
असोसिएट प्रोफ़ेसर एवं अध्यक्ष, हिन्दीविभाग
गवर्नमेंट डिग्री कॉलेज फॉर विमेन, बेगमपेट, हैदराबाद

व्यक्ति की पहचान उसके चरित्र से होती है।वह चरित्र ही है जिसके कारण कोई प्रशंसनीय बनता है तो कोई निंदनीय।आज हम अपने चारों ओर देख रहे हैं कि हमारे देश की क्या स्थिति है। बलात्कार, भ्रष्टाचार, घिनौनी राजनीति, गिरती हुई अर्थव्यवस्था, बढ़ती हुई बेरोज़गारी, महंगी शिक्षा, निजीकरण आदि नित- नई कितनी ही समस्याएं हमारे सामने प्रत्यक्ष है। ऐसे में साधारण सामान्य जीवन यापन करने वाले व्यक्तियों को शोषण के चक्र में बुरी तरह पीसा जा रहा है। नई-नई नीतियां बनाई जा रही हैं नये कानून उन पर थोपे जा रहे हैं और धनवान, राजनीतिज्ञ, उच्च पदाधिकारियों पर इन कानूनों का कोई प्रभाव दिखाई नहीं दे रहा है।वे मज़े में जीवन बिता रहे हैं।

भारत प्रजातांत्रिक देश है। जनता ही नेता को चुनती है। वर्तमान इस दुर्दशा के लिए हम भी कहीं न कहीं जिम्मेदार हैं।हमें युवा पीढ़ी को अच्छे संस्कार व शिक्षा देकर उनका सुचरित्र निर्माण करना होगा। ताकि वह आगे जाकर एक चरित्रवान नागरिक, नेता, मंत्री, उच्च -पदाधिकारी एवं धनाढ्य बने। देश की भावी स्थिति में परिवर्तन आए। भारत फिर से सोने की चिड़िया और विश्व गुरु की गरिमा से गौरव प्राप्त करें। इसके लिए साहित्य एक सशक्त माध्यम सिद्ध हो सकता है। साहित्य द्वारा व्यक्ति के संपूर्ण चरित्र का विकास संभव है। साहित्य व्यक्ति में संवेदना के अंकुर जगाता है।उसी के माध्यम से हम दूसरों की समस्याओं को गहरे से अनुभव कर सकते हैं।

साहित्य कई बार युग परिवर्तनकारी होता है। कबीर दास, तुलसीदास, रहीम और वृंद आदि कवि इसके ज्वलंत उदाहरण हैं। जिन के दोहे आज भी अनुकरणीय एवं प्रासंगिक हैं। व्यक्ति के चरित्र निर्माण में हिंदी दोहे अपना विशेष महत्व रखते हैं।वर्षों बाद भी उक्त कवियों की वाणी का महत्व यथावत बना हुआ है और आगे भी रहने वाला है। निम्नलिखित गुणों को अपनाकर हम अपने चरित्र को संवार सकते हैं।---

1. अहंकार का त्याग :-आज के युग में अशांति का एक कारण अहंकार भी है जिसे देखें वह स्वयं को ऊंचा और दूसरे को नीचा गिराने की धुन में अहंकारी बनता जा रहा है। ऐसे में इस कुप्रवृत्ति का नाश होना बहुत ही आवश्यक हो गया है क्योंकि अहंकारी स्वभाव व्यक्ति के चरित्र का नाश कर देता है। हम कितने ही बड़े विद्वान, धनवान या उच्च अधिकारी बन जाए यदि हम में अहंकार प्रवेश कर जाए तो हमारी सारी विद्या, धन और पद का गौरव घट जाता है। लोग तो हमसे किनारा करेंगे ही, ईश्वर भी हमसे दूर रहेगा।

"रहिमन गली है सांकरी, दूजो नहीं ठहराहिं।
अपुन अहै तो हरि नहीं, हरि तो आपुन नाहिं।।"

अर्थात् - हृदय की गली बहुत तंग है उसमें एक साथ दो नहीं ठहर सकते अहंकार और ईश्वर। क्योंकि जहां अहंकार आ जाता है वहां ईश्वर नहीं और जहां ईश्वर होते हैं अहंकार नहीं रहता भाव यह है कि मन में यदि ईश्वर को रखना है तो अहंकारी स्वभाव त्यागना होगा।-कबीर भी कहते हैं।-

"जब मैं था तब हरि नहीं, अब हरि है मैं नाहिं।
प्रेम गली अति सांकरी, तामें दो न समाहिं।।"

अर्थात् - जब इस हृदय में "मैं" (अहम्, अहंकार) का वास था। तब इस में हरि (ईश्वर) नहीं थे और अब जब इसमें हरि का वास है तो इसमें से मेरे अहम् का नाश हो चुका है। यह हृदय रूपी प्रेम गली इतनी सांकरी है कि उस में दोनों में से सिर्फ़ एक ही समा सकते हैं।

Scanned with CamScanner

बौद्ध साहित्य एवं साहित्यकार : एक अनुशीलन

प्रधान संपादक :
डॉ. अविनाश जायस्वाल
ISBN : 978-81-943387-2-7

प्रकाशन :
डॉ. साईनाथ सोटनक्के
संबोधी प्रकाशन
हा. नं. 75, हुंडा (प.उ.), ता. उमरी, जि. नांदेड
महाराष्ट्र - 431 807
मो. नं. 9550258826
E-mail : sontakke.sainath@gmail.com

प्रथम संस्करण : 28-02-2020
मुद्रक : SKV Colors, Hyderabad
मूल्य : 280

पुस्तक में संग्रहित लेखों से संबंधित सभी तथ्य, वाद-विवाद,
विचार के संबंध में आलेख के लेखक और लेखिका स्वयं उत्तरदायी हैं,
इसके लिए प्रकाशक, प्रधान संपादक, संपादक मंडल जिम्मेदार नहीं।

Thanks to
Prof. L. B. Laxmikant Rathod
Principal, Nizam Collage, Hyderabad

&

Prof. Pradeep Aglave
Dept. of Ambedkar Thoughts,
Nagpur University, Nagpur

Scanned with CamScanner

8. हिंदी के बौद्ध धर्म में स्त्रियों का स्थान

डॉ. अफ़सर उन्निसा बेगम

बौद्ध धर्म मानवीय धर्म है। जो नैतिकता को सर्वाधिक महत्व देता है। भगवान बुद्ध ने अहिंसा की शिक्षा के साथ ही अपने धर्म के अंग के तौर पर सामाजिक, आर्थिक, बौद्धिक, राजनैतिक स्वतंत्रता एवं समानता की शिक्षा दी। उनका मुख्य ध्येय मनुष्य को धरती पर इसी जीवन में विमुक्ति दिलाना था। उन्होंने मनुष्य से मृत्यु के बाद स्वर्ग प्राप्ति का काल्पनिक वादा नहीं किया। वैदिक युग में स्त्रियों की अवस्था अत्यंत उन्नति और परिष्कृत थी। परंतु परवर्ती उत्तर वैदिक काल में उनकी स्थिति में अवनति का प्रारंभ हुआ। जिसका प्रमुख कारण राजनैतिक अस्थिरता एवं सामाजिक संकीर्णता थी। वैदिक धर्म में स्त्रियों को समानता के अधिकारों से वंचित कर दिया गया था। ऐसी स्थिति में बौद्ध धर्म का उदय स्त्रियों की स्वतंत्रता का महत्वपूर्ण कारक बना। गौतम बुद्ध विश्व के पहले महामानव थे जिन्होंने स्त्री जाति के प्रति सम्मान एवं समानता की भावना प्रकट करते हुए 'धम्म' के समक्ष उन्हें बराबर समझा और भिक्षुणी संघ की स्थापना की।

बुद्ध एवं बौद्ध धर्म में स्त्री संबंधी विचारों को लेकर भ्रांतियाँ फैली हुई थी। परंतु भिक्षुणी संघ की स्थापना एक ऐसा क्रांतिकारी कदम था जिससे स्त्रियों की स्वतंत्रता और उनके व्यक्तित्व के विकास को अभिव्यक्ति मिली। बुद्ध के पहले वैदिक व्यवस्था में स्त्रियों को धार्मिक, आध्यात्मिक यज्ञोपवीत कार्यों का अधिकार नहीं था। उन्हें केवल भोग विलास की वस्तु समझा जाता था। ऐसे में बुद्ध ने उन्हें बराबरी का दर्जा देकर समाज में अपना महत्व अनुभूत कराने का अवसर दिया। जिससे स्त्रियों में स्वयं के प्रति आत्मावलंबन एवं स्वाभिमान का भाव जगा। साथ ही समाज का दृष्टिकोण उन के प्रति बदला। उसे योग्य समझा जाने लगा। शिक्षा का अधिकार बुद्धकालीन समाज में प्राप्त होना स्त्रियों की स्थिति को बेहतर बनाने का महत्वपूर्ण कदम सिद्ध हुआ। इससे संबंधित एक प्रसंग प्रस्तुत है- राजा प्रसेनजित अपनी दूसरी रानी के पुत्र को शिक्षा दिलाते हैं। लेकिन मल्लिका की पुत्री की शिक्षा रोक दी जाती है। तब मल्लिका राजा प्रसेनजित से पुत्री को शिक्षा दिलाने की बात कहती है। वे इंकार कर देते हैं। तब पूरा मामला महात्मा बुद्ध के सामने मल्लिका ले जाती है और पुत्री को शिक्षा प्राप्त कराने का अधिकार मांगती है। जिसमें मल्लिका को विजय प्राप्त होती है। भगवान बुद्ध कहते हैं कि पुत्र पुत्री एक समान हैं और दोनों को ही शिक्षा दी जाए।

शिक्षा मनुष्य को अज्ञानता के अंधकार से निकाल कर ज्ञान के प्रकाश में लाती है। थेरीगाथा ग्रंथ में अनेक भिक्षुणियों के जीवन काल का परिचय प्राप्त होता है। जिनके

Scanned with CamScanner

माध्यम से बौद्ध काल की स्त्री शिक्षा पद्धति पर समुचित प्रकाश पड़ता है। इस ग्रंथ में अनेकों थेरियों का उल्लेख प्राप्त होता है। जो कवयित्रियाँ भी थी। थेरीगाथाओं में 73 भिक्षुणियों की 522 गाथाओं ने अपने जीवन अनुभव को बताया है। नैतिक सच्चाई और भावनाओं की गहनता की विशेषता ही इस काव्य का प्राण है। भिक्षुणियां आशावादी है। निर्वाण की परम शक्ति का वे खुशी से वर्णन करती है। 'अहो सुखेति सुखो झायामी अहों ! मैं कितनी सुखी हूँ। मैं कितने सुख से ध्यान करती हूँ। यह उद्गार आत्मध्वनि को प्रदर्शित करते हैं। 'सीति भूतमिह् निब्बुता' अर्थात निर्वाण को प्राप्त को प्राप्त कर मैं परम शांत हो गई। बुद्ध ने स्त्री को ज्ञानी मातृत्वशील, सृजनात्मक, भद्र व सहिष्णु माना। बुद्ध की शिष्याओं में अनेक ऐसी महिलाएँ थी, जो मानसिक एवं दैहिक से पूर्णत: मुक्त होकर अहर्त् बनी कुछ भिक्षुणियों की अपनी शिष्याएँ थी और वे न केवल धम्म के प्रतिपादन में सक्षम थी बल्कि बुद्ध या उनके कुछ दूसरे वरिष्ठ भिक्षुओं की मध्यस्थता के बिना भी दूसरी भिक्षुणियों को पूर्ण मुक्ति दिला सकती थी।

बौद्ध युग के आरंभ के साथ ब्राह्मण युग की कुरीतियों और बुराइयों की भत्सर्ना प्रारंभ हुई। कर्मकांडों (यक्ष बली) का विरोध किया गया। शिक्षा व्यवस्था में भी परिवर्तन आया। उसे स्त्री पुरुष, ऊँच-नीच के भेद-दोष से मुक्त किया। बौद्ध मठ एवं विहारों की स्थापना की गई। संघ में स्त्रियों के प्रवेश की आज्ञा मिलते ही संघारामों में शिक्षण-प्रशिक्षण के कार्य आरंभ हो गए। बौद्ध काल में शिक्षण पद्धति की परंपरा विहारों द्वारा होती थी। जिसकी पूर्ति मुख्यत: भिक्षु एवं भिक्षुणी जीवन से संबंधित थी। बौद्धकालीन समाज में बहुविवाह एवं पुनर्विवाह का प्रचलन था। थेरीगाथा में थेरी इसी दासी का विवाह एक श्रेष्ठ पुत्र से हुआ था। उस श्रेष्ठ पुत्र की पहले ही एक पत्नी थी जो शीलवती, गुणवती तथा यशवती थी। समाज में बहुपत्नीत्व को मान्यता थी, परंतु 'आपस्तम्ब' का कथन है कि जब उसकी प्रथम पत्नी धर्म कार्य में पति का साथ देने योग्य न रग जाए अथवा वंध्या न हो जाए, तभी पुरुष को पुनर्विवाह करना चाहिए। एक से अधिक पत्नियों को वही रख सकता था जिसमें उनके भरण-पोषण का सामर्थ्य हो। विवाह की आयु साधारणत: 16 वर्ष थी। स्त्रियों ने बौद्ध धर्म में दीक्षा प्राप्त कर समानता और मानसिक स्वतंत्रता प्राप्त की। पूर्व युग समाज में अपने विचार प्रकट करने का स्त्री को अधिकार नहीं था।

ऐसे में तथागत ने नारी स्वतंत्रता व नारी मुक्ति की बात करके जीवन के यथार्थ को सभी के समक्ष प्रस्तुत कर नारियों को आत्मविश्वास का मार्ग प्रदान किया। कपिलवस्तु के सेठ की लड़की विशाखा का विवाह श्रावस्ती में एक कंजूस सेठ के लड़के से हो जाता है। कंजूस सेठ उसके मायके से मिले धन पर नजर रखता है। उसे घर से निकालकर सारा धन

हड़प लेना चाहता है। विशाखा इसका विरोध करती है। अंतत: मामला बुद्ध के समक्ष जाता है। बुद्ध निर्णय सुनाते हैं कि ससुराल में बहू को भी बेटी के समान स्वतंत्र तौर पर रहने एवं जीने का अधिकार है।

डॉ. अफ़सर उन्निसा बेगम,
गवर्मेंट डिग्री कॉलेज फॉर वूमेन, बेगमपेट, हैदराबाद।
मो. 8374208336

Scanned with CamScanner

कापीराइट : संपादक

प्रकाशक की लिखित पूर्वानुमति के बिना पुस्तक के किसी भी अंश का मुद्रित अथवा अन्य किसी भी रूप में प्रयोग नहीं किया जा सकता।

अमीर ख़ुसरो का साहित्यिक-सांस्कृतिक अवदान

मूल्य : 300 रु

संपादक
डॉ0 फ़ैयाज़ अहमद

संस्करण : 2020

ISBN No : 978-81-942453-5-3

मुद्रक एवं प्रकाशक:
मुस्लिम एजुकेशनल प्रेस, अलीगढ़
मो0 9897165496

Ameer Khusrau Ka Sahityik-Sanskritik Awadaan

अमीर ख़ुसरो का साहित्यिक-सांस्कृतिक अवदान

संपादक
डॉ0 फ़ैयाज़ अहमद

संपादक मंडल

डॉ0 मोहम्मद अरशद ख़ान
डॉ0 मोहम्मद साजिद ख़ान
डॉ0 शमशाद अली
डॉ0 राकेश वाजपेयी
डॉ0 दरख़शाँ बी
डॉ0 काशिफ़ नईम
डॉ0 परवेज मुहम्मद

Scanned with CamScanner

फारसी और हिन्दी को एक ही ध्वनि प्रवाह में गुंफित कर दिया गया है। यह कला संस्कृति–साधक को ही सिद्ध हो सकती है।"[11]

समष्टि रूप में हम कह सकते हैं कि "संभव है खुसरो के नाम से प्रचलित समस्त रचनाएँ खुसरो द्वारा रचित न हों और जो रचित भी हों उनका प्राचीन रूप यथावत् सुरक्षित न रहा हो, किन्तु.....जन–जीवन में प्रचलित लोक साहित्य को साहित्य में स्थान दिलाने का प्रथम श्रेय हिन्दवी के कवि अमीर खुसरो को ही है.....लोकसाहित्य की श्रीवृद्धि में खुसरो ने महत्त्वपूर्ण योग दिया। यही कारण है कि हिन्दी साहित्य के इतिहास में अमीर खुसरो का नाम अमिट है।"[12]

संदर्भ :

1. हिन्दी साहित्य कोश (भाग–2) : प्रधान संपादक धीरेन्द्र वर्मा, 1985, ज्ञानमंडल लिमिटेड, वाराणसी, पृ० 19
2. हिन्दी साहित्य (द्वितीय खंड) : प्रधान संपादक धीरेन्द्र वर्मा, 1959, भारतीय हिन्दी परिषद्, प्रयाग, पृ० 555
3. हिन्दी साहित्य का इतिहास : आचार्य रामचंद्र शुक्ल, कमल प्रकाशन, नयी दिल्ली, पृ० 48
4. हिन्दी साडित्य का दूसरा इतिहास : बच्चन सिंह, 2012, राधाकृष्ण प्रकाशन, नयी दिल्ली, पृ० 66
5. हिन्दी साहित्य का इतिहास : आचार्य रामचंद्र शुक्ल, पृ० 49
6. हिन्दी साहित्य का दूसरा इतिहास : बच्चन सिंह, पृ० 66
7. अमीर खुसरो : डॉ0 सोहनपाल सुमनाक्षर, 1990, प्रकाशन विभाग, सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय, नई दिल्ली, पृ० 86
8. हिन्दी साहित्य का आलोचनात्मक इतिहास : डॉ0 रामकुमार वर्मा, 2007, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, पृ० 121
9. हिंदी साहित्य का इतिहास : सं० डॉ0 नगेन्द्र, 2018, मयूर बुक्स, नई दिल्ली, पृ० 73
10. हिन्दी साहित्य और संवेदना का विकास : रामस्वरूप चतुर्वेदी, 2009, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, पृ० 26
11. हिन्दी साहित्य का सरल इतिहास : विश्वनाथ त्रिपाठी, 2016, ओरियंट ब्लैकस्वॉन प्रा० लि०, नई दिल्ली, पृ० 09
12. हिन्दी साहित्य (द्वितीय खंड) : प्रधान संपादक धीरेन्द्र वर्मा, पृ० 556

अमीर खुसरो का हिंदी साहित्य को अवदान

डॉ0 अफ़सर उन्निसाँ बेगम

'खुसरो बाजी प्रेम की मैं खेलूं पी के संग।
जीत गई तो पिया मोरे हारी पी के संग।।'

हिंदी साहित्य के इतिहास में अमीर खुसरो एक ऐसा नाम है जो आठ सौ साल के बाद भी अविस्मरणीय है और चिर स्मरणीय रहेगा। अमीर खुसरो का पूरा नाम 'अब्दुल हसन यमीनुद्दीन खुसरो' था। उनका जन्म सन् 1253 ई. में एटा, उत्तर प्रदेश के पटियाली नामक कस्बे में हुआ था। उनके पिता अमीर सैफुद्दीन महमूद लाचीनी निवासी तुर्क थे। खुसरो केवल सात वर्ष के थे जब उनके पिता का देहाँत हो गया। उनके नाना ने उनकी देखभाल व परवरिश की। बचपन में उनके गुरु साद उद्दीन मोहम्मद थे। काव्य लेखन की प्रतिभा खुसरो में ईश्वर प्रदत्त थी। आठ वर्ष की आयु में खुसरो ने काव्य रचना आरंभ की और बारह वर्ष की आयु में उनका काव्य लेखन उच्च कोटि को छूने लगा। बीस वर्ष के होते होते वे कवि के रूप में मशहूर हो गए। अमीर खुसरो हजरत निजामुद्दीन चिश्ती औलिया अल्लाह के मुरीद थे। मुर्शिद की मृत्यु तक खुसरो जो कुछ काव्य रचना करते उनको सुनाते थे और उस पर मुर्शिद की प्रतिक्रिया व टिप्पणी सुनकर अपनी प्रतिभा में और निखार लाने का प्रयास करते थे। खुसरो अपने मुर्शिद का आदर और उन से अगाध प्रेम करते थे। मुर्शिद की मृत्यु का उन्हें गहरा सदमा पहुँचा था। हजरत ख्वाजा निजामुद्दीन की मृत्यु के कुछ महीनों बाद ही इस महान साहित्यकार का निधन सन् 1325 ई. में हो गया।

खुसरो बहुमुखी प्रतिभा के सम्पन्न व्यक्ति थे। वे एक महान कवि, शायर, गद्यकार, गायक, कलाकार, संगीतज्ञ और सैनिक थे। उनका परिवार कई पीढ़ियों से राज–दरबार से संबंधित था। अमीर खुसरो ने स्वयं सात सुल्तानों का शासन काल देखा था। वे पहले मुसलमान कवि थे जिन्होंने हिंदी शब्दों का प्रयोग खुलकर किया था और हिंदवी एवं फारसी में एक साथ लिखने वाले भी वे ही पहले कवि थे। खड़ी बोली को लोकप्रिय बनाने का श्रेय भी उन्हीं को जाता है। वह अपने आप को हिंदुस्तानी और भाषा को हिंदवी कहलाने में गर्व का अनुभव करते थे। उन्हें हिंदुस्तान से बहुत प्रेम था। अपनी कृतियों में उन्होंने हिंदुस्तान की भाषा, साहित्य, संस्कृति, मिट्टी, आबोहवा, पर्वत,

Scanned with CamScanner

मनुष्यता के आईने में साहित्य

संपादक
डॉ. साईनाथ सोनटक्के
डॉ. मौलाली दासरी

2020

Scanned with CamScanner

7. 'लौटते हुए' उपन्यास में चित्रित आदिवासी जीवन की व्यथा

डॉ. जे. सरिता (एसोसिएट प्रोफेसर)

विश्व पटल पर औद्योगीकरण और उच्च तकनीकी विकास की रफ्तार की दौड़ में आदिवासी समाज कहीं दिखाई नहीं देता है। समूचे विश्व में भौतिक प्रगति दिन-ब-दिन बढ़ती जा रही है, परंतु आदिवासी समाज आज भी आदिम जीवन जीने को अभिशप्त है। भारत एक विशाल देश है जिसमें विभिन्न धर्म, जातियाँ, सभ्यता एवं संस्कृति के लोग निवास करते हैं, जिनमें अनेक प्रकार की विविधताएँ मिलती हैं। इन्हें तीन विभागों में विभाजित किया जा सकता है- ग्रामीण समाज, नगरीय समाज और आदिवासी समाज। यह स्पष्ट है कि नगरीय एवं ग्रामीण समाज से आदिवासी समाज पृथक् है। इस समाज का अधिकांश हिस्सा आज भी दूर-दराज के जंगलों, पहाड़ों, पर्वतों में निवास कर रहा है। आदिवासी युगों-युगों से दुर्गम क्षेत्र में रहते आये हैं। यह कहना कोई गलत नहीं होगा कि उनका नगरीय संस्कृति एवं सभ्यता से संपर्क न के बराबर रहा है। 19 वीं शताब्दी में अंग्रेजों ने आधुनिक संसाधनों को विकास किया। इससे कुछ आदिवासी नगरीय लोगों के संपर्क में आने लगे।

वाल्टर भेंगरा 'तरूण' कृत 'लौटते हुए' उपन्यास का प्रकाशन 2005 में हुआ है। उपन्यासकार झारखंड के निवासी है। इस उपन्यास के मूल में आदिवासी विस्थापन की समस्या की त्रासदी बड़ी ही मार्मिकता से चित्रित हुई है। विस्थापन के कारण आदिवासियों को अपनी ही जमीन से पलायन करना पड़ रहा है। सरकारी तंत्र पूँजीपतियों के साथ मिलकर आदिवासी क्षेत्र की खनिज संपदा प्राप्त करने के लिए कभी विकास के नाम पर तो कभी बंदूक की नोक पर आदिवासियों को विस्थापित कर रही है। आदिवासी युवा शहरों की ओर पलायन कर रहे हैं। झारखंड के छोटा नागपुर के एक गाँव की युवती सलोमी अपने परिवार को चलाने के लिए दिल्ली जैसे महानगर में आकर 'आया' का काम करती है। भारत में आया के रूप में काम करनेवाली महिलाओं का कोई संगठन नहीं है। उन महिलाओं पर होनेवाले शोषण की खबरें समाचार पत्रों में पढ़ने में आती हैं। सलोमी भी इसी प्रकार का काम करती है परंतु मालिक मौके का फायदा उठाकर उसका जबरन दैहिक शोषण करता है।

आदिवासी बहुत भोले होते हैं, वे महानगरों की संस्कृति से परिचित नहीं हैं। वे जिस माहौल में पले-बढ़े होते हैं, वहाँ शोषण की संस्कृति नहीं है। एक तरफ विस्थापन की मार से आदिवासी युवा-युवती शहरों में आकर काम कर रहे हैं दूसरी तरफ उन्हें शोषण का शिकार होना पड़ रहा है। इस उपन्यास की नायिका सलोमी बार-बार दैहिक शोषण का शिकार होकर गाँव लौटती है। अपने गाँव वापस लौटने के बाद वह आदिवासी महिलाओं को इस

Scanned with CamScanner

जाती है- "सलोनी स्वयं यह न जान सकी थी कि वह कहाँ जा रही है। वह नींद में चल रही थी। अंधकार में सब कुछ डूबता हुआ सा प्रतीत हो रहा था। वह भी उसी नीम अंधेरे में विलीन होने के लिए जा रही थी। भीड़ भरे शहर में।...उस शहर में जहाँ लोगों की भीड़ थी...मकानों की भीड़ थी...अट्टालिकाओं की भीड़ थी... कार, बसों और दूसरे यातायात के साधनों की भीड़ थी...एक उठे हुए तूफान की तरह वह शहर भी सबको निगल जाना चाह रहा था। सलोमी भी उन लहरों की चपेट में आ ही गयी थी...दिल्ली के स्वप्न प्रदेश में !"3 आदिवासी शहरी, नगरी दुनिया के चकाचौंध जीवन को नहीं जानते। वे प्राकृतिक जीवन जीने वाले लोग हैं, हरित पत्तों से अच्छादित जंगलों वनों जैसे प्रकृति में निवास करनेवाले लोगों का शहर में दम घुटता है। सलोमी जब शहर आकर घर का काम करने लगी तब वह शहरी लोगों की हैवानियत का शिकार हो जाती है।

संदर्भ :

1. वाल्टर भेंगरा 'तरूण', 'लौटते हुए', पृ.सं. 115-116
2. प्रफुल्ल रंजन झा, 'भारतीय मानवशास्त्र', पृ.सं. 253
3. वाल्टर भेंगरा 'तरूण', 'लौटते हुए', पृ.सं. 31

डॉ. जे सरिता (एसोसिएट प्रोफेसर)
शासकीय महिला महाविद्यालय,
बेगमपेट, हैदराबाद।
मो.नं. 9290613200

Scanned with CamScanner

शिक्षा, साहित्य व हिंदी सिनेमा में किन्नर विमर्श

संपादक

अमित कुमार दुबे

२०२०

Scanned with CamScanner

तरतीब

किन्नर उदारीकरण : अद्यतन भारतीय समाज डॉ. किरण खन्ना	13
भारतीय सिनेमा में किन्नर विमर्श डॉ. राखी उपाध्याय	19
हिन्दी सिनेमा और किन्नर विमर्श में अंतरसंबंध डॉ. रुपाली दिलीप चौधरी	23
हिन्दी साहित्य में किन्नर विमर्श डॉ. रमेश कुमार/ डॉ. संतोष कुमारी/ डॉ. रविकांत	28
हिन्दी सिनेमा में शबनम मौसी डॉ. श्वेत प्रकाश	34
शिक्षा, साहित्य और हिन्दी सिनेमा... पुरुषोत्तम शाकद्वीपी	40
किन्नर आत्मकथाओं में... डॉ. अनु पांडेय	43
समाज का पिछड़ा वर्ग किन्नर समुदाय डॉ. लवलीन कौर	51
हिन्दी कथा साहित्य में किन्नर विमर्श डॉ. किरण बेन ओ. डोडिया	57
समकालीन हिन्दी उपन्यासों में किन्नर विमर्श डॉ. जूली कुमारी	65
किन्नर और शिक्षा डॉ. संजय कुमार	76
'किन्नर कथा' में किन्नर विमर्श डॉ. सविता प्रमोद	82
Educational and Social Issues faced by Eunuchs Hardeep Singh	90
शिक्षा, साहित्य और हिन्दी सिनेमा में किन्नर विमर्श रजनी सोनी	97
हिन्दी उपन्यासों में किन्नर विमर्श संगीता कुमारी पासी	104
हिन्दी सिनेमा में चित्रित किन्नर जीवन डॉ. जे. सरिता	110
21 वीं सदी के उपन्यासों में किन्नर विमर्श श्रीआमुलपुरे सूर्यकांत विश्वनाथ	114
किन्नर और समाज की मुख्यधारा डॉ. मनिता सेंगर	118
नालासोपारा में किन्नर मनोविज्ञान आराधना साव	122

2020

Scanned with CamScanner

हिन्दी सिनेमा में चित्रित किन्नर जीवन

डॉ. जे. सरिता

समाज में किन्नरों की स्थिति अत्यंत दयनीय एवं तिरस्कृत है। समाज में हमेशा किन्नरों को नकारात्मक दृष्टि से ही देखा गया है। किन्नरों को देखते ही लोग नजरें चुराते हैं। लोग इनसे संपर्क करना भी पसंद नहीं करते हैं। न्यायालय ने किन्नरों को 14 अप्रैल, 2014 को तीसरे लिंग के रूप में यानी 'Third Gender' मान्यता दी है। बावजूद समाज इन्हें हिजड़ा, किन्नर, नपुसंक, छक्का, खुसरा, ट्रासंजेंडर आदि नाम लेते हैं। स्वतंत्रता के इतने साल बाद भी यह समाज को शिक्षा, आवास, स्वास्थ्य आदि मूलभूत सुविधाओं से वंचित है।

ताली बजाना, लोगों की खुशियों में शामिल होना, नाच-गाकर बधाई देना आदि उनके जीवन का हिस्सा है। समाज में किन्नरों के प्रति एक छवि बन गयी है। इनकी सबसे बड़ी समस्या पहचान की है। कृष्णमोहन झा की एक कविता से किन्नर जीवन की व्यथा और स्थिति को समझ सकते हैं–

"उनकी गालियों और तालियों
से भी उड़ते हैं
खून के छींटे,
और यह जो गाते-बजाते
उधम मचाते,
हर चौक-चौराहों पर
वे उठा देते हैं अपने
कपड़े ऊपर
दरअसल उनकी अभद्रता नहीं
उस ईश्वर से प्रतिशोध
लेने का उनका एक तरीका है

Scanned with CamScanner

बौद्ध साहित्य एवं साहित्यकार
एक अनुशीलन

प्रधान संपादक
डॉ. अविनाश जायसवाल

Scanned with CamScanner

23. कबीर पर बौद्ध और जैन दर्शन का प्रभाव - डॉ. चांदावत विजया 61-62
24. बौद्ध मत के सिद्धांत - सुमन कनौजिया 63-65
25. बौद्धकालीन शिक्षा प्रणाली - डॉ. कमलेश कुमार 66-68
26. बुद्ध के सिद्धांत-बुद्ध और बौद्ध भारत - डॉ. कांबले गौतम 69-71
27. डॉ. बी.आर. आंबेडकर एवं बौद्ध विचारधारा - डॉ. गट्ला रमेशबाबू 72-74
28. कबीर के साहित्य पर बौद्धों के शून्य और क्षणिकवादों का प्रभाव : एक अध्ययन - डॉ. के.वी. कृष्णमोहन 75-77
29. बौद्ध साहित्य के मूलस्तंभ त्रिपिटक - डॉ. नागलगिद्द मारुति 78-80
30. विश्व में बौद्ध धर्म का विकास एवं सिद्धांत - डॉ. जे. सरिता 81-82
31. बौद्ध धर्म में कला - डॉ. टी. कविता 83-85
32. बुद्ध एवं जैन साहित्य में धार्मिक एकरूपता - डॉ. शेक सादिक पाषा 86-88
33. डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर एवं बौद्ध विचारधारा - डॉ. शक्तिराज काले 89-91
34. बौद्ध धर्म : उद्भव एवं विकास - डॉ. जी. एच. नीता 92-94
35. डॉ. आंबेडकर और बौद्ध विचारधारा - डॉ. नागवल्ले रमा व्यंकटराव 95-96
36. तथागत बुद्ध का जीवन - पूनम कुमारी 97-99
37. हिंदी के बौद्ध साहित्यकार राहुल सांकृत्यायन : व्यक्तित्व एवं कृतित्व - डॉ. एम. राधा 100-101
38. डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर के धार्मिक विचार - डॉ. सोनटक्के साईनाथ 102-104
39. बोधिसत्व डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर और बौद्ध विचारधारा - माधनुरे राहुल 105-107
40. बौद्ध धर्म : उद्भव एवं विकास - कल्पना दासरी 108-110
41. महात्मा गौतम बुद्ध - ताल्ला निरंजन 111-113
42. महात्मा बुद्ध - शेख महबूब रमजान 114-115
43. बौद्ध धर्म का विकास - के. माधुरी 116-117
44. चीन में बौद्धिक धर्म - बी. तीरूमला देवी 118-120
45. बौद्ध विहार शांति उपवन, लखनऊ - शेख मस्तान वली 121-122
46. बौद्ध धर्म का उद्भव एवं विकास - सय्यद ताहेर 123-125
47. बौद्ध धर्म के विभिन्न दार्शनिक ग्रंथ - चेन्नकेशव रेड्डी 126-128
48. बौद्ध मत के सिद्धांत : आदिवासी जनजाति मुंडा - गेडाम प्रवीण 129-131
49. हिंदी साहित्य में बौद्ध धर्म के विचार - अनिता जी. 131-134

Scanned with CamScanner

30. विश्व में बौद्ध धर्म का विकास एवं सिद्धांत

डॉ. जे. सरिता

बुद्धम् शरणम् गच्छामि । मैं बुद्ध को शरण जाता हूँ।
धम्मम् शरणम् गच्छामि । मैं धम्म की शरण में जाता हूँ।
संघम् शरणम् गच्छामि । मैं संघ के शरण में जाता हूँ।

बौद्ध धर्म को अपनाना यानी सच्चे धर्म का मार्ग अपनाना है। ऐसे धर्मात्मा एवं महान योधा सिद्धार्थ का जन्म लुंबिनी के कपिलवस्तु वन में हुआ जो कि अब नेपाल में है। उनके पिता का शुद्धोधन और माँ का नाम महामाया था। उनके जन्म के बाद ही एक भविष्यवता ने कहा कि यह बालक एक प्रसिद्ध चक्रवर्ती बनेगा अगर इसके मन में वैराग्य भाव उत्पन्न हुआ तो उसे सन्यासी बनाने से कोई रोक नहीं सकता। राजा शुद्धोधन ने कई प्रयासों के बावजूद सिद्धार्थ को सांसारिक दुःखों से विचलित नहीं कर पाए और वे सांसारिक बंधनों को सांसारिक बंधनों को छोड़कर महल से निकल पड़े। घूमते-घूमते गया नामक स्थान पर बोधिवृक्ष के नीचे ध्यान मुद्रा में कई दिनों तक भूखे प्यासे दुःख के निवारण के लिए तपस्या की। तब इन्हें ज्ञान की प्राप्ति हुई और उन्होंने लोगों को इस वास्तविक ज्ञान से परिचित कराया। उनके प्रवचनों को उनके शिष्यों ने बाद में कई ग्रंथों में लिपिबद्ध किया है।

बुद्ध के बाद बौद्ध धर्म, दर्शन, परंपरा में कई महान दार्शनिकों ने बौद्ध धर्म का अनुसरण किया। बुद्ध ने चार आर्य सत्यों का सिद्धांत दिया जिससे उन्होंने इस चार शक्तियों को समझने के आसान तरीके बताए। जो आम जीवन से जुड़े हैं।

दुःख - जीवन का अर्थ ही दुःख है।

दुःख कारण - इस दुःख का कारण ही तृष्णा और चाहत है।

दुःख निरोध - इस तृष्णा से मुक्ति पाना ही दुःख निरोध है।

दुःख निरोध का मार्ग - तृष्णा से मुक्त अष्टांगिक मार्ग के अनुसार पाया जा सकता है।

उन्होंने अहिंसा का सिद्धांत देते हुए सभी तरह की जीव हिंसा को गलत बताया। बुद्ध के निर्वाण के बाद बौद्ध धर्म, दर्शन, परंपरा में कई महान दार्शनिक हुए जैसे आनंद मैत्री, चद्रकीर्ति, पदमसंभव, जागनि, नागार्जुन, कुमारजीवा ने बौद्ध धर्म की स्थापना की।

यह धर्म तेजी पूरी दुनिया में फैल गया, और इस धर्म के प्रचार से भिक्षुओं की संख्या बढ़ने लगी। बड़े-बड़े राजा महाराज भी उनके शिष्य बनाने लगे बुद्ध ने बहुजन हिताय

Scanned with CamScanner

बहुजन सुखाय लोक कल्याण के लिए अपने धर्म का देश विदेश में प्रचार करने के लिए भिक्षुओं को भेजने में सम्राट अशोक ने भी अहम् भूमिका निभाई। मौर्यकाल तक आते-आते भारत से निकाल कर बौद्ध धर्म आज विश्व के प्रमुख धर्मों में से एक हो गया है। विश्व में करीब 192 करोड़ लोग बौद्ध धर्म को माननेवाले हैं। विश्व में ईसाई धर्म के बाद बौद्ध धर्म के अनुयायी है। विश्व के सभी महाद्विपों में बौद्ध धर्म के अनुयायी पाए जाते हैं। आज दुनिया में बौद्ध धर्म की आबादी हिंदू, इस्लाम धर्म के बराबर है।

भारत में इस धर्म का उदय हुआ किंतु फैलते-फैलते यह एशिया का प्रमुख धर्म बन गया और अब चीन बौद्ध धर्म की सबसे बड़ी आबादी वाला देश है। उसके साथ-साथ जापान, थाईलैंड, कोरिया, ताइवान, श्रीलंका, नेपाल, इंडोनिशा, मलेशिया, सिंगठापुर, ब्राजील, फ्रांस, रुस, बांग्लादेश तक फैल गया।

आगे चल कर बौद्ध धर्म को दो संप्रदाय बने हीनयान और महायान बौद्ध धर्म के चार प्रमुख तीर्थ स्थल है। लुंबिनी, बोधगया, सारनाथ और कुशीनगर।

बौद्ध धर्म के धर्मग्रंथ को त्रिपिटक कहा गया है। बुद्ध ने कहा है कि अष्टांगिक मार्ग ही मनुष्य के सभी निवारणों का मार्ग है। अष्टांगिक मार्ग है- सम्यक दृष्टि, सम्यक संकल्प, सम्यक वाक्, सम्यक कर्म, सम्यक जीविका, सम्यक प्रयास, सम्यक स्मृति, सम्यक समाधि आदि। अगर मनुष्य इन अष्टांगिक मार्ग को अपना कर जीवन यापन में आगे बढे तो वह हर दु:खों से निवारण पा सकता है और जीवन में सफल रहेगा।

डॉ. जे. सरिता
शासकीय महिला महाविद्यालय, बेगमपेट
हैदराबाद।
मो.नं. 9290613200

Scanned with CamScanner